Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रावणी विधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CHECKED 1973

॥ ओ३म् ॥

श्रावणी की विधि

प्रथम संस्कारविधि में लिखी हुई रीतियों से अग्नि स्थापना दि करके, आघार और आज्य भागों को देकर, (१) ब्रह्मणे स्वाहा (२) छन्दोभ्यः स्वाहा ये दो आहुतियें देकर, निम्न लिखित घी की दश आहुतियें दे।

(१) सावित्र्यै स्वाहा (२) ब्रह्मण स्वाहा (३) श्रद्धायै स्वाहा (४) मेधायै स्वाहा (५) प्रज्ञायै स्वाहा (६) धारणायै स्वाहा (७) सदसस्पतये स्वाहा (८) अनुमते स्वाहा (९) छन्दोभ्यः स्वाहा (१० ऋषिभ्यः स्वाहा।

तदनन्तर निम्न लिखित ऋग्वेद की ११ ऋचाओं से अहुति दे

अग्निमीले पुरोहितँ यज्ञस्य देव मृत्विजम्। होतारँ रत्न धातमम् ॥

कुषुम्भकस्त वीट्गिरेः प्रवर्तमानुकः वृश्चिकस्यारसँ विषमरसँ वृश्चिक ते विषम् अवदँस्त्वँ शंकुने भद्रमा वद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धिनः। यदुत्पतन्वदंसि ककुरिथेथा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥

* ओ३म् *

पुस्तक की संख्या..... 224/Edu

पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या.....14166

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है।

कोई महाशय १५ दिन से अधिक दो तक पुस्तक रखते

224.86
14166

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोममृतावृधा ॥

धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य ओभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥

गन्तानो यज्ञं यज्ञियाः सुशमिन्त्रोता हवमरक्ष एवयामरुत्। ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि युयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवोनिदः ॥

यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति। देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ॥

प्रतिचक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम्। रक्षोभ्यो वधमस्यंतमशनिं यातुमद्भ्यः ॥

ऋ० म० ७ अंतिम मंत्र ॥

अग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये सोभर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्ते राजञ्छृतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः
अरातीवा मा नस्तारीन्मोच नः किँ चना
मम् दिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ॥
समानी व् आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तुवो मनो यथा वः सुसहासति ॥

इस के पश्चात् यजुर्वेद के:—

सदस्यतिमद्भुतँ प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनि मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥ यजुर्वेद अ० ३२ मँ० १३

इस मन्त्र से आचार्य हवन करे, किन्तु मन्त्र सब बोलें। पश्चात् समस्त विद्यार्थी पलाश की हरी समिधाओं को घी से भिगोकर सावित्री मन्त्र से आहुति दें। इस प्रकार तीन बार करें। प्रत्येक श्रेणी का काष्ठिक सब से समिधा इकट्ठी कर के डाल दे। पुनः "स्विष्टकृत्" आहुति देकर प्रातराश किया जावे।

"शन्नोमित्रः" इस मन्त्र को पढ़कर, उस के पश्चात् मुखधोकर, आचमन करके, अपने २ आसनों पर बैठकर, जल पात्रों में कुशाओं को रखकर, हाथ जोड़कर, गुरु के साथ तीन बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओङ्कारव्याहृतिपूर्वक सावित्री पढ़कर वेदों के निम्न लिखित मन्त्र पढ़ें।
पश्चात् यह मन्त्र पढ़ें।

ऋग्वेदः—

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं। होतारं रत्नधातमम्।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानिवः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

यजुर्वेदः—

॥ ओ३म् ॥ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव-स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म॥

सामवेदः—

अग्न आ याहि वीतये गृणानोहव्य दातये निहोता सत्सि बर्हिषि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठः परावत आ जगन्था परस्याः । सृकं सं शाय पविमिन्द्र तिग्मं विशत्रून्ताढि विमृधो नुदस्व ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगै स्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

अथर्ववेदः——

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥

पनाय्यं तदश्विदा कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः । सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वां इत् तांउप यातं पिबध्यै ॥

सहनोऽस्तु सहनोऽवतु, सह न इदं वीर्यं वदस्तुब्रह्मइन्द्रस्तद् वेद येन यथान विद्विषामहे ॥

इस वेद मन्त्र को पढ़कर सामवेद का वामदेव्यगान करें।

गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत वर्ष का इतिहास

(वैदिक तथा आर्ष पर्व)

आर्य्यभाषा में

श्री उपाध्याय रामदेव बी. ए., एम. आर. ए. एस.,

रचित ।

यह अपूर्व ग्रन्थ दो बार छप चुका है, और अब तक इस की मांग कम नहीं हुई। कारण यह है कि आर्य्य जाति की विशेष दृष्टि से लिखा हुआ यह पहिला ही इतिहास ग्रन्थ है जिस से आर्य्य सन्तान को पुनरुद्धार में अच्छी सहायता मिलने की सम्भावना है।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्ता,

गुरुकुलीय पुस्तक भण्डार,

डाकघर, शामपुर [द्वारा कनखल]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुलग्रन्थावली

सँस्कृत

१ अष्टाध्यायी, तत्त्वप्रकाशिकया सहिता (पूर्वार्द्धम्) ... २)
२ अष्टाध्यायी, तत्त्वप्रकाशिकया सहिता (उत्तरार्द्धम्) ... १॥)
३ नामिकः..... ⁼)॥
४ सन्धिविषयः..... ⁼)
५ अष्टाध्यायी (मूलमात्रम्) ।)
६ संस्कृत-प्रथम पुस्तकम् ⁼)
७ संस्कृत प्रवेशिका ... ⁼)
८ संस्कृताङ्कुरः ... ⁼)
९ आर्य्यसूक्तिसुधा ... ।)
१० आख्यातिकः ... ।)
११ काव्यलतिका (अत्र किरातार्जुनीयाद्भट्टिकाव्याच्छात्रोपयोगिनः श्लोकाः संगृहिताः, मल्लिनाथटीका सहिताः ... ... ॥)
१२ धातुपाठः ... ... ।)
१४ बालनीति-कथा-माला ⁼)
३१ संक्षिप्त मनुस्मृतिः...॥)

आर्य्यभाषा

१ भौतिकी विज्ञान प्रवेशिका .... ॥)
२ आर्य्यभाषापाठावली प्रथम भाग .... ।)
३ आर्य्यभाषापाठावली द्वितीय भाग..... .... ।)
४ रसायन प्रवेशिका .... ॥⁼)
५ प्राचीन भारतवर्ष का इतिहास .... १।)

मिलने का पताः—प्रबन्धकर्ता,
गुरुकुलीय पुस्तक भंडार,
डाकघर, शामपुर [द्वारा कनखल]

224.86
14166
Entered in Database
Signature with Date
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार
224
८६
14,166

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का अर्थदण्ड लगेगा।

१००००.६५६।

...) ... २)
...) ... १॥)
...का ... ≈)
... ≈)
... ।)
... ।)
...ोपयोगिनः
... ॥)
...-माला ≈)

१ ..... ॥)
२ ..... ।)
३ ..... ।)
४ रसायन पत्रिका .... ॥≈)
५ प्राचीन भारतवर्ष का इतिहास .... १।)

मिलने का पताः—प्रबन्धकर्ता,
गुरुकुलीय पुस्तक भंडार,
डाकघर, शामपुर [द्वारा फतेहपुर]

224,86
14166

Entered in Database
Signature with Date

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar